॥श्रीहरिः॥

Ver 7.1
सप्तम संस्करण

LEARN GEETA
तस्मात् योगी भवार्जुन

॥ विद्या धर्मेण शोभते ॥
गीता परिवार
॥ गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें ॥

गीता परिवार द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता का शुद्ध उच्चारण सीखने हेतु अनुस्वार, विसर्ग एवं आघात प्रयोग सहित, चरणानुसार विभाग, मूल संहिता पाठ के अनुकूल

श्रीमद्भगवद्गीता
षोडश (16वाँ) अध्याय

दैवासुरसम्पद्विभागयोग

- लर्नगीता एप्प : app.learngeeta.com
- नया पंजीकरण : reg.learngeeta.com
- अभ्यास सामग्री : practice.learngeeta.com
- विवेचन सुनें : vivechan.learngeeta.com
- परीक्षा पंजीकरण : exam.learngeeta.com
- YouTube : youtube.com/c/GeetaPariwar
- Instagram : instagram.com/geetaparivar
- साधक पोर्टल : online.learngeeta.com
- पुस्तक क्रय : store.learngeeta.com
- प्रचार सामग्री : learngeeta.com/pracharak
- गीतासेवी बनें : sewa.learngeeta.com
- गीता कक्षा उपहार : gift.learngeeta.com
- Facebook : facebook.com/geetaparivar
- Twitter : x.com/Learn_Geeta

वसुदेवसुतं(न्) देवं(ङ्), कंसचाणूरमर्दनम्।
देवकीपरमानन्दं(ङ्), कृष्णं(वँ) वन्दे जगद्गुरुम्॥

ॐ

श्रीपरमात्मने नमः

श्रीमद्भगवद्गीता

अथ षोडशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

अभयं(म्) सत्त्वसंशुद्धिः(र्), ज्ञानयोगव्यवस्थितिः।
दानं(न्) दमश्च यज्ञश्च, स्वाध्यायस्तप आर्जवम्॥1॥

अहिंसा सत्यमक्रोधः(स्), त्यागः(श्) शान्तिरपैशुनम्।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं(म्), मार्दवं(म्) ह्रीरचापलम्॥2॥

तेजः क्षमा धृतिः(श्) शौचम्, अद्रोहो नातिमानिता।
भवन्ति सम्पदं(न्) दैवीम्, अभिजातस्य भारत॥3॥

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च, क्रोधः(फ्) पारुष्यमेव च।
अज्ञानं(ञ्) चाभिजातस्य, पार्थ सम्पदमासुरीम्॥4॥

दैवी सम्पद्विमोक्षाय, निबन्धायासुरी मता।
मा शुचः(स्) सम्पदं(न्) दैवीम्, अभिजातोऽसि पाण्डव॥5॥

द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्, दैव आसुर एव च।
दैवो विस्तरशः(फ्) प्रोक्त , आसुरं(म्) पार्थ मे शृणु॥6॥

प्रवृत्तिं(ञ्) च निवृत्तिं(ञ्) च, जना न विदुरासुराः।
न शौचं(न्) नापि चाचारो, न सत्यं(न्) तेषु विद्यते॥7॥

असत्यमप्रतिष्ठं(न्) ते, जगदाहुरनीश्वरम्।
अपरस्परसम्भूतं(ङ्), किमन्यत्कामहैतुकम्॥8॥

Learngeeta.com

LEARN GEETA
तस्मात् योगी भवार्जुन

एतां(न्) दृष्टिमवष्टभ्य, नष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः।
प्रभवन्त्युग्रकर्माणः, क्षयाय जगतोऽहिताः ॥9॥

काममाश्रित्य दुष्पूरं(न्), दम्भमानमदान्विताः।
मोहाद्गृहीत्वासद्ग्राहान्, प्रवर्तन्तेऽशुचिव्रताः॥10॥

चिन्तामपरिमेयां(ञ्) च, प्रलयान्तामुपाश्रिताः।
कामोपभोगपरमा, एतावदिति निश्चिताः॥11॥

आशापाशशतैर्बद्धाः(ख्), कामक्रोधपरायणाः।
ईहन्ते कामभोगार्थम्, अन्यायेनार्थसञ्चयान्॥12॥

इदमद्य मया लब्धम्, इमं(म्) प्राप्स्ये मनोरथम्।
इदमस्तीदमपि मे, भविष्यति पुनर्धनम्॥13॥

असौ मया हतः(श्) शत्रुः(र्), हनिष्ये चापरानपि।
ईश्वरोऽहमहं(म्) भोगी, सिद्धोऽहं(म्) बलवान्सुखी॥14॥

आढ्योऽभिजनवानस्मि, कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया।
यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य, इत्यज्ञानविमोहिताः॥15॥

अनेकचित्तविभ्रान्ता, मोहजालसमावृताः।
प्रसक्ताः(ख्) कामभोगेषु, पतन्ति नरकेऽशुचौ॥16॥

आत्मसम्भाविताः(स्) स्तब्धा, धनमानमदान्विताः।
यजन्ते नामयज्ञैस्ते, दम्भेनाविधिपूर्वकम्॥17॥

अहङ्कारं(म्) बलं(न्) दर्पं(ङ्), कामं(ङ्) क्रोधं(ञ्) च संश्रिताः।
मामात्मपरदेहेषु, प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः॥18॥

Learngeeta.com
LEARNGEETA
तस्मात् योगी भवार्जुन

तानहं(न्) द्विषतः(ख्) क्रूरान्, संसारेषु नराधमान्।
क्षिपाम्यजस्रमशुभान्, आसुरीष्वेव योनिषु॥19॥

आसुरीं(यँ) योनिमापन्ना, मूढा जन्मनि जन्मनि।
मामप्राप्यैव कौन्तेय, ततो यान्त्यधमां(ङ्) गतिम्॥20॥

त्रिविधं(न्) नरकस्येदं(न्), द्वारं(न्) नाशनमात्मनः।
कामः(ख्) क्रोधस्तथा लोभः(स्), तस्मादेतत्त्रयं(न्) त्यजेत्॥21॥

एतैर्विमुक्तः(ख्) कौन्तेय, तमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः।
आचरत्यात्मनः(श्) श्रेयः(स्), ततो याति परां(ङ्) गतिम्॥22॥

यः(श्) शास्त्रविधिमुत्सृज्य, वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति, न सुखं(न्) न परां(ङ्) गतिम्॥23॥

तस्माच्छास्त्रं(म्) प्रमाणं(न्) ते, कार्याकार्यव्यवस्थितौ।
ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं(ङ्), कर्म कर्तुमिहार्हसि॥24॥

Learngeeta.com

LEARN GEETA
तस्मात् योगी भवार्जुन

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासु उपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां(यँ) योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे दैवासुरसम्पद्विभागयोगो नाम षोडशोऽध्यायः॥

॥ॐ श्रीकृष्णार्पणमस्तु॥

Ver 7.1
सप्तम संस्करण

स्तर 2 उच्चारण नियमावली

- **अवग्रह** - अवग्रह 'ऽ' केवल एक चिह्न है जो लुप्त हुये 'अकार(अ)' का सूचक है। स्वतन्त्ररूप उच्चारण नहीं है।
- **मृदु व्यंजन** - वर्गीय व्यंजनों के तृतीय, चतुर्थ, पंचम (ग्, घ्, ङ्,ज्, झ्, ञ्, ड्, ढ्, ण्, द्, ध्, न्, ब्, भ्, म्) वर्ण, य्, र्, ल्, व्, ह्।
- **कठोर व्यंजन** - वर्गीय व्यंजनों के प्रथम, द्वितीय वर्ण (क्, ख्, च्, छ्, ट्, ठ्, त्, थ्, प्, फ्) एवं श्, ष्, स्
- **जिह्वामूलीय** - 'क' या 'ख' से पहले विद्यमान अर्धविसर्ग जिह्वामूलीय (ᳵख्), उच्चारण ख् की तरह
- **उपध्मानीय** - 'प' या 'फ' से पहले विद्यमान अर्धविसर्ग उपध्मानीय (ᳵफ्), उच्चारण फ् की तरह
- **श्रीमद्भगवद्गीता में प्रयुक्त छन्द** - श्रीमद्भगवद्गीता में दो ही प्रकार के छन्दों का उपयोग हुआ है।
  1. **अनुष्टुप्** - 4 चरण, 32 अक्षर, प्रत्येक चरण में 8 अक्षर 2. **त्रिष्टुप्** - 4 चरण, 44 अक्षर, प्रत्येक चरण में 11 अक्षर
  # पूरी गीता में पांच स्थानों पर अपवादस्वरुप (2/6, 2/29, 8/10, 11/1,15/3) किसी चरण में नियत अक्षरों से एक अक्षर न्यून या अधिक पाये जाते हैं।
- **आघात के अपवाद नियम** - स्वर के पश्चात् संयुक्त वर्ण होने पर भी उसमें एक ही वर्ण के दो बार आने पर, तीन व्यंजनों के संयुक्त होने पर, प्रथम वर्ण रेफ(उपर र्) या हकार होने पर आघात नहीं दिया जाता।
- **विसर्ग(ः) सन्धि नियम** विसर्ग(ः) का उच्चारण पूर्व/पर वर्ण सन्दर्भानुसार ह, ख्, फ्, श्, ष्, स्, र् जैसा होगा।

1. **उत्व सन्धि - अ+:+अ = ओऽ** - दर्प+:+अभिमानश्च = दर्पोऽभिमानश्च
   अ+:+मृदुवर्ण = **ओ** - दुराचार+:+भजते = दुराचारो भजते
2. **लोप सन्धि - अ+:+अकारभिन्नस्वर** = मन+:+आधत्स्व = मन आधत्स्व
   आ+:+कोई भी स्वर या मृदुवर्ण = माययापहृतज्ञाना+:+आसुरम् = माययापहृतज्ञाना आसुरम्
3. **रुत्व सन्धि - अ/आ भिन्नस्वर + : +कोई भी स्वर / मृदुवर्ण = र्** - दु+ : + निरीक्ष्यम् = दुर् + निरीक्ष्यम् = दुर्निरीक्ष्यम्
   कोई भी स्वर (अव्यय में) + : + कोई भी स्वर / रेफभिन्न मृदुवर्ण = र् - पुन+ :+ जन्म = पुनर्+ जन्म = पुनर्जन्म
4. **शत्व, षत्व, सत्व सन्धि -**
   कोई भी स्वर + : + च् / छ्/ श् ⟶ **श्** ⟶ योगिन + : + चैनम् = योगिनश्चैनम्
   कोई भी स्वर + : + ट् / ठ्/ ष् ⟶ **ष्** ⟶ धनु + : + टङ्कार = धनुष्टङ्कार
   कोई भी स्वर + : + त् / थ्/ स् ⟶ **स्** ⟶ हन्यु + : + तन्मे = हन्युस्तन्मे
5. **जिह्वामूलीय, उपध्मानीय सन्धि-**
   कोई भी स्वर + : + **क् / ख्** ⟶ **ख् की ध्वनि** ⟶ द्विषत + : + क्रूरान् - द्विषत(ᳵख्) क्रूरान्
   कोई भी स्वर + : + **प् / फ्** ⟶ **फ् की ध्वनि** ⟶ क्रोध + : + पारुष्यमेव = क्रोध(ᳵफ्) पारुष्यमेव

Learngeeta.com

LEARNGEETA
तस्मात् योगी भवार्जुन

योगेशं(म्) सच्चिदानन्दं(वँ), वासुदेवं(वँ) व्रजप्रियम्।
धर्मसंस्थापकं(वँ) वीरं(ङ्), कृष्णं(वँ) वन्दे जगद्गुरुम्॥

© GEETA PARIWAR
गीता परिवार के साहित्य को किसी भी प्रकार से अन्य संस्था अथवा अन्य स्थान पर उपयोग/प्रकाशित करने से पूर्व अनुमति लेना आवश्यक है। अनुमति लेने हेतु पूर्ण प्रयोजन के साथ हमें consent@learngeeta.com पर ईमेल करें।